AMNESTY
INTERNATIONAL

सलिल शेट्टी
महासचिव

सलिल शेट्टी जुलाई 2010 में संगठन के आठवें महासचिव के रूप में एमनेस्टी इंटरनेशनल से जुड़े।

मानवाधिकार व निर्धनता के मामलों के जाने–माने विशेषज्ञ सलिल शेट्टी मानवाधिकारों के हनन को रोकने के लिए दुनिया भर में फैले आंदोलन के कामकाज का नेतृत्व करते हैं। वह संगठन के मुख्य राजनीतिक सलाहकार, रणनीतिकार एवं प्रवक्ता हैं।

इससे पहले सलिल शेट्टी 2003 से 2010 तक संयुक्त राष्ट्र सहस्त्राब्दि अभियान के निदेशक रहे। संयुक्त राष्ट्र के काम के दौरान सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य (एमडीजी) को हासिल करने के लिए वैश्विक स्तर पर एडवोकेसी अभियान को खड़ा करने में उन्होंने खास एवं केन्द्रीय भूमिका निभायी। गौरतलब है कि सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य (एमडीजी) के तहत भूख, निरक्षरता एवं बीमारी से लड़ने के आठ लक्ष्यों को लेकर सितम्बर 2000 में संयुक्त राष्ट्र में सहमति बनी थी और जिसके तहत खास तौर पर तय किये गये इन लक्ष्यों को 2015 तक हासिल कर लेना था।

सहस्त्राब्दि अभियान के जरिये सलिल शेट्टी ने सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य (एमडीजी) को हासिल करने के लिए नागरिक समाज, मीडिया, निजी क्षेत्र और स्थानीय सरकारों से भरोसेमंद सहयोग जुटाने में सफल रहे।

उनके देखरेख में सहस्त्राब्दि अभियान ने विकासशील देशों की सरकारों और दाताओं को सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य (एमडीजी) के प्रति उनकी प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के लिए पहले से अधिक जवाबदेह बनाया।

सलिल शेट्टी ने 'निर्धनता के खिलाफ कारवाई के वैश्विक आह्वान' के गठन और 17 अक्टूबर 2009 को ली गई पहलकदमी 'निर्धनता के खिलाफ खड़े हों' के दौरान सक्रिय भागीदारी निभायी, जिसमें दुनिया भर से 17 करोड़ 30 लाख लोग शामिल हुए।

संयुक्त राष्ट्र से जुड़ने से पहले सलिल शेट्टी अंतरराष्ट्रीय एनजीओ एक्शनएड के मुख्य कार्यकारी थे। 1998 से 2003 तक मुख्य कार्यकारी रहते हुए सलिल शेट्टी ने एक्शनएड को अभियान चलाने व पैरवी करने वाले एक प्रमुख एनजीओ में स्थापित किया। वह मुख्य कार्यकारी के पद पर बेंगलुरु में एकशनएड इंडिया के 10 वर्ष तक और नैरोबी में एक्शनएड केन्या के 3 वर्ष तक निदेशक रहने के बाद पहुंचे थे।

सलिल शेट्टी ने जब एक्शनएड इंडिया छोड़ा, एकशनएड विकास के मुद्दों पर काम करने वाला यूनाइटेड किंगडम (यूके) का तीसरा सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय एनजीओ और दुनिया के निर्धनता–केन्द्रित मुद्दों पर काम करने वाले अग्रणी एनजीओ में गिना जाने लगा था।

सलिल शेट्टी ने मानवाधिकार अभियानों में पहले–पहल बेंगलुरु में शिरकत की थी। मां के महिलाओं के समूहों के साथ काम करने और पिता के दलित आंदोलन के साथ जुड़े होने के कारण उनका घर स्थानीय एवं राष्ट्रीय सामाजिक कार्यकर्ताओं का अड्डा बन गया था। 1976 में आपातकाल की घोषणा के वक्त अपने स्कूली दिनों से ही सलिल शेट्टी मानवाधिकार हनन के खिलाफ चले अभियानों में सक्रियता से जुटे रहे।

भारतीय नागरिकता रखने वाले सलिल शेट्टी ने लंदन स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स से सामाजिक नीति एवं योजना में विशेष योग्यता के साथ एमएससी और इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट (अहमदाबाद) से एमबीए किया है।

सलिल शेट्टी अंग्रेजी, हिन्दी, कन्नड और तुलु भाषाएं बोलते हैं।